भूखों का गुस्सा

लोग भूख से मर रहे हैं! आम की गुठलियों और
बीपीएल कार्डों के बारे में
तुम्हारे मक्कारी भरे झूठों के बावजूद
सच यही है – लोग भूख से मर रहे हैं।
वे भूख से मर रहे हैं
जबकि गोदामों में 6 करोड़ टन अनाज सड़ रहा है
वे मर रहे हैं – गुठलियां और छाल और पत्ते खाकर
और राजधानियों में फास्टफूड रेस्त्रां की
एक और मल्टीनेशनल चेन का उद्घाटन हो रहा है
वे अपने ग़रीब होने के "प्रमाण" गिरवी रख रहे हैं
लालची दुकानदारों के पास
और सरकारें ग़रीबों की तलाश के लिए
करोड़ों के बजट वाली योजनाएं बनाने में व्यस्त हैं
...
लेकिन भूलो मत
कि दावानल और बड़वानल से भी विकराल है
पेट की आग
आज इन भूखे लोगों ने
सिर्फ गुठलियां ही पटकी हैं मुख्यमंत्री की कार पर
कल उनकी नफरत की चिगारियां
दरिन्दों के इस पूरे निजाम पर गिरेंगी
कल उनके गुस्से की आग में
धू-धू कर जलेंगे तुम्हारे महल, तुम्हारे गोदाम,
तुम्हारा लूट का राज
तुम्हारा 'स्वराज', तुम्हारा रामराज!

चला अटलू का मंतर रोजगार हुआ छूमंतर...

गिलि-गिलि-गिलि-गिलि फू ...
जय बाबा अमरीका वाले
जय टाटा, जय बिड़ला, जय अम्बानी
ओम् वर्ल्ड बैंक, ओम् आईएमएफ, ओम् डब्लूटीओ
ओम् हिंग-क्लिंग... चिन्ता छोड़ो – सुख से जिओ!
ओम् मोंटेक सिंह अहलूवालिया
कर दे बेटा देश को दिवालिया!
ओम् छंटनी, ओम् तालाबंदी, आम 'डाउनसाइजिंग'
ओम् आईटी, ओम् वाईटी, ओम प्राइवेटाइजिंग!
ओम् छह महीने में एक करोड़ रोजगार
अरे बोलने में अपने बाप का क्या जाता है यार?
ओम् फिक्की, ओम् सीआईआई, ओम् एसोचैम
ओम् हुजूर, माईबाप, 'ऐट योर सर्विस, आई ऐम!
ओम् जनता, ओम् छात्र, ओम् मजूर
सबको अभी ठीक करता हूं हुजूर!
ओम् लाठी, ओम् गोली, ओम् कड़े कदम,
ओम् बम-बम, बम-बम, बम-बम-बम!

['दिशा छात्र संगठन' की केन्द्रीय दीवार पत्रिका 'ज्वार' (सितम्बर 2001) से साभार]